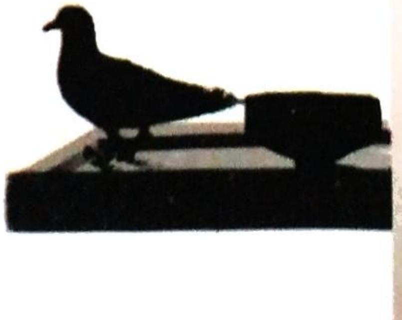
द से दुःख बड़ी ई से ईश्वर



पायल राठौड़

द से दुःख
बड़ी ई से ईश्वर

(कविता संग्रह)

पायल राठौड़

पंक्ति प्रकाशन

पहला संस्करण: जनवरी 2025
दूसरा संस्करण: अप्रैल 2025
ISBN : 978-81-981336-8-7
मूल्य : ₹225

प्रकाशक : पंक्ति प्रकाशन
द से दुःख बड़ी ई से ईश्वर(कविता संग्रह)

मुद्रक : थॉमसन प्रेस (इंडिया) लिमिटेड
एडिटर : प्रयास कोठारी
आवरण : ऑरबिन्दो घोष
टाइप सेटिंग : अनु पाल

First Edition : January, 2025
Second Edition :April, 2025
ISBN : 978-81-981336-8-7
Price : ₹225

Publisher : Pankti Prakashan
Email : panktihouse@gmail.com
Phone : 9129374050

Da se Dukh Badi ee se Ishwar
Poetry Collection by *Payal Rathore*

मेरे सारथी श्री कृष्ण, माँ-पिता, सोम
विद्यालय के दो बरगद और एक नीम, सुख की धूल
और दुःख के फूल को समर्पित।

संसार की सारी औरतें
खोई हुई गुड़िया हैं।

भूमिका

किताबों की यात्रा अनुशासन की यात्रा है, बंधने-बाँधने की यात्रा है। फिर वो शब्द हो या मन, जो मुझे कभी रास नहीं आया। सालों तक सोशल मीडिया पर लिखकर भूल जाने के क्रम को तोड़ते हुए मन की चाह के विपरित यह किताब आप सभी के सामने है। मेरे पास नया ज्यादा कुछ नहीं होता पर, बिखरे को समेटने की कला मैंने माँ से विरासत में पाई है। प्रेम के बिना जीवन कम सुंदर होता है और मेरी मानिए तो दुःख के बिना भी। सुख का सूरज लगातार चमकता रहे तो मन के माथे पर पसीने की बूंदें, चमकने लगती हैं और इससे उदासी की प्यास जगती है और मनुष्य न चाहते हुए भी दुःख खोजने लगता है। सुख जीवन की थाली का मीठा है तो दुःख नमक...।

जीवन बंधने की चाह से शुरू होता है और न बांधने की चाह पर ख़त्म। यात्रा करने की चाह, छुपे हुए पंख देती है। हँसने की इच्छा के साथ ही पुतली के पीछे बन जाती है आँसू की पहली बूँद। क्षमा करते-करते एक दिन मनुष्य बुद्ध बन जाता है और सब कुछ छोड़कर चल देता है। जीवन में प्रेम ऐसी तपस्या की तरह आया जिसके सफल होने पर सामने उपस्थित हुए देवता से कोई वर नहीं माँगना था। प्रेम की ऐसी तपस्या ने मेरे मन को मंदिर कर दिया और ईश्वर उसमें अपने आप ही आकर प्रतिष्ठित हो गया। प्रेम में जय उसकी नहीं जो प्रेम पाना सीख गया बल्कि प्रेम में जय उसकी है जो दानवीर कर्ण की तरह प्रेम का दान करना सीख गया।

ईश्वर को एक समय जीवन में ऐसे याद किया जैसे कोई अपने सबसे बड़े अपराधी को याद करता है, उसके लिए सबसे बड़ा दण्ड सोचता है और यह संभव न होने पर खीझता है। एक समय ऐसे जैसे जन्म-जन्म से यही प्रियतम हो, कृतज्ञता से न आँख मिला पाना संभव हुआ न कुछ कहना। जो समर्पित

किया जा सका वो बस आत्मा के आँसू थे। जिसने दुःख को पूजना सीख लिया, सुख; स्वयं देवता बन उसके जीवन के मंदिर में प्रतिष्ठित होने को तरसता है।

यह किताब छोटी-छोटी रंग-बिरंगी टहनियों से अपनी छत बनाने की यात्रा है। यह किताब स्मृति है उस जीवन की जो दुःख से चला, जिसने प्रेम नदी पर अपनी प्यास बुझाई और जो अब ईश्वर की गोद में सुस्ताता है। संभवतः हमें दुःख में प्रेम नही, साथ चाहिए होता है और ठीक ऐसे ही प्रेम में प्रेमी नहीं ईश्वर चाहिए होता है। हम जीवनभर बनते हैं और इस निर्माण में सबसे अधिक चोट दुःख की छैनी की होती है। जिसने जिसे बनाया, वही उसका देवना...। यदि यह सत्य है तो दुःख ही हमारा देवता है। बारिश से प्यास बुझाने वालों का गला कभी न कभी सूखता ही है। हम कभी नहीं समझ पाते कि दरअसल प्रेम गंतव्य होता ही नहीं। प्रेम पर रुका रहना प्रेम को एक दिन उदासी में बदल देता है और फिर उस उदासी को ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूर नहीं कर पाता।

शीर्षक टेने से पंक्तियाँ कविताएँ नहीं हो जाती। मैं इन शब्दों और पंक्तियों को आप पाठकों को सौंपती हूँ। आप इन्हें जैसे चाहे पढ़ें, समझें। किताब में कुछ क्षणिकाएँ भी हैं जो मेरी पसंदीदा रही हैं। इस किताब की सफलता इसकी प्रतियाँ नहीं आँकेगी इस किताब को पढ़ते हुए पल भर भी यदि आप में से किसी को यह लगे कि दुःख सुंदर है, प्रेम पीड़ा नहीं देता और ईश्वर की बाँहें हमारे लिए सदा खुली हैं तो यही किताब की सफलता होगी।

सप्रेम

पायल राठौड़

जनवरी 2025

अनुक्रम

पता

यदि कोई तुम्हें
भगवान भरोसे छोड़ गया है तो
वह तुम्हारा अपराधी नहीं है
उसने तुम पर उपकार किया है

वह तुम्हें संसार के
सबसे सही पते पर
छोड़ गया है।

प्रतीक्षा

तुम लौटकर
आओ न आओ
चाहो न चाहो!

जो तुम्हारी प्रतीक्षा करता है
तुम्हें आधा पा लेता है।

ईश्वर और मैं

मैं कुछ
ग़लत करने से बचती हूँ
मैं ईश्वर से डरती हूँ

इसलिए नहीं कि
वह मेरा कुछ बुरा कर देगा

इसलिए कि
उसे बुरा लगेगा।

प्रवृति

कभी–कभी मनुष्य
दुःख से बचना नहीं चाहता

उसे अधिक से अधिक
भोगना चाहता है
ताकि वह ख़त्म हो जाए।

खोना-पाना

आधा संसार
खोई हुई चीज़ों से बना है

और आधा उनसे
जिन्हें वे खोई हुई चीज़ें
मिल गईं।

दुःख का फूल

फूल चुनते हुए तुम
कभी–कभी
बहुत दूर तक भी
चले जाते हो

तो प्रेम करते हुए तुम
दुःख क्यों नहीं उठा पाते ?

रुमाल

एक वक़्त के बाद
ज़िन्दगी में
अपनी प्रेम कहानी के लिए
उतनी ही जगह होती है

जितनी, किसी अलमारी में
रूमाल के लिए।

मुलाक़ात

उन सभी लोगों से मिलो
जो तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं

तुम जानोगे कि
यह संसार कितना सुंदर है।

बागडोर

प्रेम को पाकर सब सुंदर है
प्रेम को खोकर भी

जो प्रेम के प्रत्युत्तर में
प्रेम पा लेंगे
वे जीवन–भर
प्रेम को संभालेंगे।

और जो प्रेम के प्रत्युत्तर में
नहीं पा सकेंगे प्रेम
उन्हें स्वयं प्रेम संभालेगा।

ढाई आखर

बारिशें आती हैं तो हम
एक बार भीगते हैं
या दो बार

फिर कहीं सूखे में खड़े
चुपचाप उसे बरसते देखते हैं

प्यार भी हम
एक बार ही करते हैं
या दो बार

फिर चुपचाप
एक इंतज़ार में खड़े
संसार को प्यार करते देखते हैं।

प्रेम का सिद्धांत

यह प्रेम का सिद्धांत है
किसी से भी
घृणा मत करो

कहीं किसी से
घृणा करोगे तो
कहीं किसी को किया
तुम्हारा प्रेम अधूरा रहेगा।

जस्टिस

संसार
सुंदर चीज़ों को बचाने की
कोशिशों में लगा रहता है

इसी बीच कम सुंदर चीज़ें
अकेली पड़कर मज़बूत हो जाती हैं

यही प्रकृति का न्याय है।

पिता

एक समय के बाद
पिता बिना डाँटे
कमरे में झाँककर आगे बढ़ जाते हैं
सुबह ज़बरदस्ती नहीं उठाते
आधा दिन अख़बार पढ़ते बिता देते हैं
और कई बार अकेले पी लेते हैं
शाम की चाय भी

एक समय बाद
पिता हमारी छुट्टियों के दिन भी नहीं गिनते
बस कभी–कभार फ़ोन करते हैं
और सब कुछ ठीक है ऐसा जान
ख़ुश हो जाते हैं
संतोष कर लेते हैं

एक समय के बाद
हमारे जीवन को लेकर चिंतित रहे पिता
अपनी मृत्यु को लेकर भी भयभीत नहीं होते

एक समय के बाद
जैसे पिता को होती थी
ठीक वैसे ही
पिता की फ़िक्र होती है।

लौटना

जो तुमसे
पीड़ा पाकर भी
तुम्हारी ओर लौटता है

सत्य यह है
केवल वही लौटता है।

"हँसते हुए माफ़ कर दो..."
"और रोते हुए...??"

"रोते हुए भी...!!"

फॉर यू

यदि कोई तुम्हारे लिए
कविताएँ लिखता है
तो या तो तुमने
उसे बहुत अधिक प्रेम दिया है
या बहुत अधिक दुःख।

बुद्ध

बुद्ध
इसलिए बुद्ध नहीं हैं कि
वे मोह तोड़ छोड़ गए
बुद्ध इसलिए बुद्ध हैं कि
वे जिन्हें छोड़ कर गए
उनसे कहीं अधिक के पास लौटे।

जीवन

जीवन एक यात्रा है
और तुम्हारा प्रेम
इस यात्रा में आया
कोई मंदिर।

एम्पटी प्लेसेस

जीवन में
कितनी ख़ाली जगहें हैं
लेकिन

किताबों और कविताओं से
थोड़ी कम ख़ाली लगती है।

माफ़ी

माफ़ कर देना
अच्छा है
और फिर से
विश्वास करना भी

संसार
सुंदर बना रहता है।

नेकी का दरिया

कहीं सुना था
नेकी कर
दरिया में डाल

इसलिए मैंने उससे
प्रेम किया
और उसे
मुझे भूल जाने दिया।

दुःख का ताप

कोई भी दुःख
कहने के लिए नहीं है

कह-कह कर
एक चिंगारी जितने दुःख को
तुमने अलाव बना दिया
और अब तुम्हें शिक़ायत है कि
संसार, इस पर हाथ सेंक रहा है।

इट्स टू डिफिकल्ट

कितना कुछ है न
भुलाने को इस संसार में

मिट्टी हो चुके फूल हैं
और प्रेमियों सहित
डूब चुके समुद्री जहाज

मेरे दुःख हैं
तुम्हारी पीड़ाएँ हैं
संताप और संघर्ष हैं

मैं
तुम्हें ही क्यूँ भुलाऊँ?

प्रेम मंदिर

आओ
कि हम तुम प्रेम करें
इक दूजे से बिन कोई आस लगाए

करें, एक दूसरे की
अनंत प्रतीक्षा
याचक न बनें

आओ प्रेम करें
कि प्रेम के मंदिर अब भी हैं
उनमें देवता नहीं हैं।

नई नाव, पुराने दुःख

जीवन को
इसमें आए दुःखों से
जानने का अर्थ था

किसी नदी को
उसमें डूबी नावों से पहचानना
जो मुझे कभी पसंद नहीं रहा।

आई हेट टियर्स

हमारे आँसू
हमेशा हमें ही नहीं भिगोते

कभी–कभी हमारे आँसुओं से
कोई और भीगता रहता है

और इस भीगने से
बचने के लिए
छतरी भी नहीं तानता।

हिचकी

एक वक़्त के बाद

एक फूल
एक पूरा मौसम हो जाता है
और एक नौका, नदी

प्यार जानता है
किस तरह याद आना है।

सत्य

जो भी
सत्य की ओर खुलती हैं
मेरी खिड़कियाँ हैं

और जो
इस सत्य को झेल सके
वही मेरा आकाश।

प्रार्थना

मैं थोड़ा और
जीवन चाहती हूँ

इतना कि

जिनसे घृणा है
उनसे भी प्रेम हो जाए।

बुके

कभी–कभी
कोई दुःख देता है
जैसे फूल देता है

हम
मना भी नहीं कर पाते।

यदि हम तितलियों को क़ैद करने की सोचते हैं
तो हमें फूलों को अलविदा कहना पड़ेगा।

बासी–उदासी

सितम्बर
उदास होने की आज़ादी देता है

और ये भी चाहता है कि
कोई उदास न हो।

सितम्बर

सितम्बर
सूखे हुए फूल पत्तियों को
सहेजने वाली एक दराज़ है

उसने कहा–
"आओ, तुम भी अपना मन यहाँ रख दो"

अक्टूबर

कुछ महीने केवल
इसलिए लौटकर आते हैं
कि वे तुम्हें परख सकें

कि तुम फूल चुनना
भूल तो नहीं गए

हरसिंगार समझाता है
अक्टूबर भी तो
इसलिए आता है।

वक़्त

वक़्त अधूरा है
और शायद यही वज़ह है कि
वह ख़ुद को पूरा करने के लिए

हम सभी से
कुछ न कुछ छीन लेता है।

रूप–अनुरूप

मैं चेहरे याद रखने में
विश्वास नहीं रखती
मैं उन्हें भूलती जाती हूँ

मेरे लिए, वे
मेरी छत पर से होकर
गुज़रे बादलों से अधिक
कुछ भी नहीं।

मौसम

प्रेम के लिए
यदि चुनी जा सकती जगह
मैं खिड़की में खड़ी हो
तुम्हें तकना चुनती

मित्रता के लिए, नदी चुनती
विश्वास के लिए, आकाश
छुपकर रो सकने को
जंगल की घास चुनती
साथ हँसने को, ईश्वर

मृत्यु के लिए
यदि चुना जा सकता कोई मौसम
तो मैं बारिश चुनती।

आसमानी दुःख

जो आसमान के दुःख
जान जाता है

वह धरती की ओर लौटता है
इसलिए कट कर गिरती हैं पतंगें।

ईश्वर

यह प्रकृति
ईश्वर की सुंदरता का
वहन कर रही है

फूलों को तोड़ने से बचो
नदियों को सूखने से बचाओ
पेड़ों पर कुल्हाड़ी उठाने से पहले
सौ बार सोचो
मत करो, पर्वतों को खोखला

क्या तुम अपने ईश्वर को
अंधा, लंगड़ा, गूंगा
बहरा देख सकते हो?

प्रेम और पूजा

निःसन्देह
ये संसार तुम्हें
ईश्वर को पूजना सिखाएगा

किन्तु ये तुम्हें ये नहीं बताएगा
कि तुम्हारा ईश्वर
प्रेम को पूजता है।

बही-खाता

जैसे मनुष्य के भीतर
ईश्वर है
ठीक वैसे ही
प्रेम के भीतर
दुःख

जो जितना प्रेम का होता है
एक दिन उतना ही
दुःख का भी हो जाता है।

आनंद

बिखरा रहना भी
एक प्रकार का आनंद है

कुछ चीज़ें इसलिए सुंदर हैं
कि वे समेटी नहीं जा सकतीं

जैसे नदियाँ, जैसे आकाश।

प्रीत–संगीत

प्रेम करो
तब तक करो
जब तक कि
प्रेम तुम्हें ये न समझा दे

प्रेम ईश्वर है
संगीत है
आकाश है
धरती है

सब कुछ है
किन्तु पीड़ा नहीं है।

छाप

क्या तुम जानते हो?

एक कागज़
यह जानता है कि
वो कभी फिर से
पेड़ नहीं हो सकता

और यही दुःख
उसे एक दिन
पीला कर देता है।

अभिलाषा

मैं उसे पाने का
कोई प्रयास नहीं करती

न ही मैं
स्वर्ग में स्थान पाने की
अभिलाषी पंक्तियों में ही हूँ

मैं केवल इतना चाहती हूँ कि
मैं ईश्वर के लिए आवश्यक हो जाऊँ
इतनी आवश्यक कि

वो मंदिर से बाहर निकले
सीढ़ियों पर बैठे
और मेरी प्रतीक्षा करे।

नीम

फूलों से भर गया है
घर के अहाते में खड़ा नीम
झूमता है तो कितना सुंदर दिखता है
पिता जब मुस्कुराते हैं
ठीक ऐसे ही दिखते हैं।

दुःख हैं
इसलिए
देवता हैं
मंदिर हैं।

माउथऑर्गन

तुम भी मुस्कुराते रहो
मैं भी न रोऊँ
तुम्हारे हाथों में गुलदस्ता हो
मेरे पसंदीदा फूलों का

मेरे हाथों में
तुम्हारे लिए माउथऑर्गन

क्या मुमकिन है?
कि बिछड़ के बरसों बाद
जो हम मिलें तो
एक दूजे के सामने खड़े
ऐसे न दिखें जैसे

एक दुःख
दूसरे दुःख के
सामने खड़ा हो।

ईश्वर की कमीज़

एक दिन
ईश्वर की जेब से
एक रूमाल गिरा
पसरा आकाश हो गया।

ऐनक छूटी-टूटी
चटका काँच
चाँद बना
बना सूरज

सतरंगी हो गई
आधे झुके ईश्वर के हाथ से
जब भी छूटी छड़ी

एक कवि के पास है
ईश्वर की वो छड़ी
ऐनक और रूमाल

एक प्रेमी के पास
ईश्वर की वो कमीज़ है
जिसका तीसरा बटन टूटा है।

बाईसाइकिल

प्रेम सदैव
एक अबोध बालक रहता है
इसकी साईकिल पर बैठकर आप
अधिक दूर नहीं जा सकते।

तस्वीर

मैं दुःख से
सुख बनाने की
कोशिश करती हूँ
तो तुम्हारी तस्वीर बनती है।

भूला-बिसरा

मनुष्य जीवनभर
ऐसे किसी की खोज में रहता है
जिसका दुःख
उसके दुःख से
हूबहू मिलता हो

किसी दिन जब उसे
ऐसा कोई मिल जाता है
तो वह अपना
आधा दुःख भूल जाता है
और उसका आधा दुःख
याद कर लेता है।

क्षमा के स्तम्भ

तुम्हारा ईश्वर
तुम्हें सबसे अधिक बार
क्षमा करता है

फिर तुम्हारी माँ
और इसके बाद प्रेम

इसके अतिरिक्त
तुम्हारे अपराधों के लिए
इस संसार में कोई तुम्हें
अंतरात्मा से क्षमा नहीं करता।

फुट प्रिंटस

कितना धीमे
बिना किसी शोर
अलग हुए
एक दूजे से हम

जैसे गिरते धान से
उड़ता फूस।

समागम

याद रहे
कोई जब तुमसे
प्रेम करता है तो तुम्हें अपनी
आत्मा तक पहुँचने का
रास्ता देता है

चाहे तुम्हारे पैर मैले हों
चाहे तुम्हारे जूतों के तलवे
उसे चुभते हों।

लॉस्ट–फाउंड

वो जानता है
पहाड़ कहाँ कोमल है
तितलियाँ कहाँ ज़्यादा
कहाँ कोई रेल नहीं जाती
और कहाँ सब जाता है
लेकिन संभव नहीं जाना

एक खोया हुआ आदमी
संसार को सही समय में
सही पते पर पहुँच गए
आदमी से अधिक जानता है।

किताब

जिस व्यक्ति के हाथों में
एक अच्छी किताब है
तुम उससे जीत नहीं सकते

अगर फिर भी
जीतना चाहते हो तो
अपने हाथों में
उससे बेहतर किताब रखो।

चाक

प्रेम में सभी
प्रेमी नहीं बनते
प्रेम कुछ को
प्रेमी बनाता है
कुछ को ईश्वर।

छोड़ कर नहीं जाते
जब हम प्यार करते हैं
तो माफ़ करते हैं।

संवाद

दुःख से भरी आँखें
धरती में नहीं गड़ती
आसमान को तकती हैं

सुख समझाता है कि
ये संसार अपना है
दुःख दिखलाता है कि
आसमान थोड़ा अधिक अपना।

कुआँ

एक वक़्त के बाद
अपने बारे में सोचना
उदास करता है

कितनी टूट-फूट
कितना अंधेरा

जैसे कोई प्यासा
लाख जतन कर
किसी पुराने अंधेरे कुएँ में
उतरे और पाए कि
वह भीतर सूखा है।

प्रेम का पुल

मनुष्य, जब तक
प्रेम के पुल पर खड़ा रहता है
पुल के नीचे से बहती
दुःख की नदी भी सुंदर दिखती है।

कपास

उसके खेतों में
कपास उगती है

और मेरे घर के पूजाघर में
सुबह–शाम
ईश्वर के आगे
उसी कपास के दिये जलते हैं

बस यही हमारी
पूरी प्रेम कहानी है।

बातचीत

"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"
प्रेम ने
कितनी विनम्रता से
पूछा था मेरे जीवन से

मैं मना नहीं कर पाई

"अच्छा, तो अब चलता हूँ मैं"
प्रेम ने
और भी अधिक विनम्रता से
जीवन से कहा था

मैं, रोक नहीं पाई।

आर्ट

दुःख सुनना
दुःख सहने से
बड़ी कला है

यह किसी दुःख से
देह को दूर रखते हुए
अपनी आत्मा पर
उस दुःख को झेलना है।

खिड़कियाँ

मत खड़ी रहो
दरवाज़े पर
खिड़कियों से
झाँक कर देखो

प्रतीक्षा के लिए हैं दरवाज़े
प्रेम के लिए खिड़कियाँ हैं।

समन्दर

जीवन, बहुत सारी बातों का
अधूरा छूट जाना है किंतु
मेरे पास शोक का समय नहीं

जब मैं समन्दर नहीं देख पाती
आसमान को देखने लगती हूँ।

पुकार

तुम क्यों नहीं रुक सकते ?

प्रेम के लिए तो
व्यस्ततम ईश्वर भी रुकता है
और सबसे तेज़ चलने वाला
समय भी।

तुम, मैं और इंद्रधनुष

तुम्हारे दुःख से
बादल बनते रहे
मेरे दुःख से बारिश

हम कभी साथ नहीं मुस्कुराए
क्या पता
इंद्रधनुष बन जाता।

उत्सव

कैसी त्रासदी है
हमें प्रेम को
एक उत्सव की भांति
स्वीकारना चाहिए था

हमने इसे, किसी
अपराध की भांति स्वीकारा।

उधार

यूँ मत लिखना
जैसे किसी नदी में
बहा दी हो
हाथ की माटी

किसी कागज़ पर कुछ लिखना
तो लिखना यूँ
जैसे किसी पेड़ को
उसके फूल लौटा रहे हो।

मन

कोई खाली नहीं है
भरे हुए हैं सभी

कोई प्रेम से भरा है
कोई घृणा से
कोई स्मृतियों
और कोई दुःख से।

प्रेम परीक्षा है
तुममें कितना ईश्वर है।

बसन्त

टूटना, बिखरना
सदैव पीड़ा बनकर नहीं रहता

किसी पतझड़ का
पीछा करते हुए तुम
स्वयं को एक दिन
फूलों के बगीचे में पाओगे।

चुपके-चुपके

नहीं, ये कविताएँ नहीं
मैंने कविताएँ नहीं लिखीं

दरअसल मैंने
इस संसार के सामने
तुम्हारा माथा चूमा।

रूठना

तुम्हें कई बार रूठते देखा
इस रूठने को समझ
केवल इतना पायी कि

देवता रूठ जाएँ तो
कुछ देर आँखें मूंद लेते हैं
मंदिर छोड़ कर नहीं जाते।

सुख

इतने सारे दुःखों में
निरंतर खोज रही हूँ

कोई तो ऐसा दुःख हो
जो मुस्कुराकर मुझसे कहे
"देखना एक दिन मैं
सुख में बदल जाऊँगा।"

दुःख के दीप

आकाश में चंद्रमा रहे
तब भी कुछ सितारों पर
दृष्टि पड़ती है

ठीक! इसी प्रकार

कभी–कभी जीवन में
कितना ही बड़ा
सुख क्यूँ न आ जाए
कुछ दुःख
स्मृति में टिमटिमाते हैं।

जादूगर

कुछ दिनों के लिए
पतंगें उड़ाना स्थगित कर दो

अधूरी छोड़ दो
अपनी पसंदीदा किताब

बरसात पर
नई कविता लिखने के लिए
अगले बरस का इंतज़ार करो

आओ, अभी मिलकर
उस जादूगर को खोजें
जो संसार की सारी बंदूकों को
फूलों में बदल दे
और सैनिकों को प्रेमियों में।

ऑटम

मिलने बिछड़ने की
सोच से परे होकर
केवल प्रेम करो

हो सकता है
जब पतझड़
अपनी मुट्ठियाँ खोले
उसमें भी तुम्हारे लिए फूल हों।

स्वीकृति

प्रेमियों के पास
प्रेम में पाई पीड़ा के लिए
उलाहना देने का
अधिकार नहीं होता

प्रेम के लिए
दी गई स्वीकृति
प्रेम से पहले
पीड़ा के लिए दी गई
स्वीकृति है।

पश्चाताप

मनुष्य की रचना
संभवतः
ईश्वर की भूल थी

मनुष्य हृदय में
प्रेम भर
ईश्वर ने
उसका पश्चाताप किया।

वायलिन

दरअसल
जब–जब
आप प्रेम करते हैं

तब–तब
अपनी आत्मा के हाथों में
एक वायलिन थमा देते हैं।

ईश्वर की गोद

प्रेम!
अनाथ नहीं करता
वो जाते हुए तुम्हें
ईश्वर की गोद में डाल जाएगा।

किसी की भावनाओं के साथ
प्रयोग मत कीजिए

किसी का जीवन
आपकी प्रयोगशाला नहीं है।

रंग

कुछ निर्णय
नितांत निजी होते हैं
साथ चलने का निर्णय
निजी है
साथ छोड़ जाने का
उससे भी निजी

माना कि यह
तुम्हारा पसंदीदा रंग है
किंतु ये तुम्हें
इसे किसी के भी चेहरे पर
मलने का अधिकार नहीं देता।

मेघ

एक मेघ की
सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि
वो रुक नहीं सकता

उस नदी के लिए भी नहीं
जो उससे प्रेम करती है।

यात्रा

जूते उतार देना
मेरी यात्राओं की
समाप्ति की घोषणा नहीं थी

जीवन ने कुछ यात्राएँ
मुझसे नंगे पाँव करवाईं।

त्रिदेव

ईश्वर!
भीड़ में नहीं मिलता
एक गहरे
अकेलेपन में मिलता है।

और इतना गहरा अकेला
तुम्हें केवल प्रेम कर सकता है।

द पिंक रिवर

यदि डूबने लगो
प्रेम में तुम
तो भयभीत न होना

फूलों से भरी नाव
जब पलटती है तो
नदी को
ख़ूबसूरत कर जाती है।

दुःख और ईश्वर

बरसाती रातों में
जब भी कभी
तेज गरज़ के साथ
बिजली चमकती है तो
हम उस तेज चमक में
केवल बिजली को देख पाते हैं
पल भर बाद ही उसे
ख़ुद में समेट लेने वाला
बादल नहीं

हमारे दुःखों और ईश्वर में भी
ऐसा ही एक संबंध है।

बन्धन

वे सरल थीं
बहुत सरल

केवल धीमे से मुस्काई
कारण नहीं पूछा

तुमने नदियों से कहा–
"चुप बैठो, उँगली रखो अपने होंठों पर"

और
बाँध बना दिए।

थका हुआ देवता

मेरा ईश्वर
मेरे भीतर है

मैं मंदिरों में केवल
यह जानने जाती हूँ कि
इस संसार का ईश्वर
खड़ा-खड़ा थककर
मेरे बगल में
बैठना तो नहीं चाहता।

दुःख की भूख

दुःख
निगल रहा था मुझे ऐसे
जैसे कोई चार दिन का भूखा

गर्म चुपड़ी रोटी का
पहला कौर आधा चबा
निगल लेता है
उससे भयभीत होना भूल
मैं एकटक उसे अपने आपको
निगलता देखती रही

मुझे उस पर
क्रोध नहीं आया
सहानुभूति हुई

इतनी सहानुभूति कि
मैं चाहने लगी
उसके भोजन का
अंतिम कौर भी
मैं ही बनूँ।

प्रेम का दुःख

दुःख को
किसी काँटे की तरह
चुभना चाहिए

लेकिन जब यही दुःख
डाली से झरे
किसी फूल की तरह
तुम्हारे सीने पर गिरे
समझना तुम
ये दुःख संसार का नहीं
प्रेम का है।

याद

मैंने प्रेम किया
और इसलिए
मेरा ईश्वर
मुझे कभी नहीं भूला

मैं जानती थी कि जिस क्षण
कोई प्रेम करने लगता है
उस क्षण से वह अपने
ईश्वर को याद हो जाता है।

इंद्रधनुष

तुम्हें रहने के लिए
स्वर्ग नहीं
संसार मिला है

यहाँ सभी के इंद्रधनुष
अधूरे हैं।

क्षणिकाएँ

1.

मुझे ईश्वर को आवाज़ देना
अच्छा लगता है
चाहे वह न सुने।

2.

तुम दुखते दिल से
नाव बनाते हो
इसलिए तुम्हारी नाव
डूब जाती है।

3.

कहीं-कहीं भुलाना
किसी बड़े कढ़ाह से उफ़नकर
बहे दूध को
साफ़ करने जैसा होता है

बुरा और
झंझट से भरा।

4.

डरो मत
कुछ भी हो
जाने दो!

क्या पता!
जाने देने से तुम
जी सको।

5.

फूल
किताबें
और प्यार

संसार के
सबसे सुंदर उपहार हैं।

6.

संसार की सारी औरतें
खोई हुई गुड़िया हैं।

7.

दुःख के पास
आँखें नहीं हैं
यह तुम्हें छूकर पहचानता है।

8.

यात्राएँ बताती हैं
ईश्वर कहाँ-कहाँ
बिखरा हुआ है।

9.

जिसमें प्रेम है
उसमें प्रेम से अधिक
क्षमा है।

10.

अधिक कुछ नहीं जानती
जैसे ईश्वर के भरोसे
ये संसार है
मैं तुम्हारे भरोसे हूँ।

11.

हमारे पास
उदासियाँ तो हैं
लेकिन अपनी उदासियों की
वाज़िब वज़हें नहीं है।

12.

मानती हूँ
नदी सुंदर है

लेकिन जो रेगिस्तान में खोया था
नदी में तलाशने से नहीं मिलेगा।

13.

मेरे जीवन में
प्रेम और ईश्वर
उधार माँगे हुए शब्द थे

मुझे जल्दी ही
इन्हें लौटाना पड़ा।

14.

नदियाँ सूख गई हैं
कोई फिर भी उनसे प्रेम करता है
इसलिए पेड़ लगा रहा है।

15.

कुछ भी पीछे नहीं छूटता
न प्रेम न पीड़ा।

16.

किसी को याद करना
बहुत सुंदर है
लेकिन याद कर के
उदास हो जाना
इसकी सुंदरता को कम कर देता है।

17.

दो पल के रुके को
सदा के लिए
रोकने की चाह ही प्रेम है।

18.

जहाँ–जहाँ
याद है तुम्हारी
वहाँ–वहाँ
एक नदी है

और उस नदी के सामने
प्यासी खड़ी हूँ मैं।

19.

असंख्य बार की गई प्रार्थनाएँ
और एक बार किया गया प्रेम
बराबर होता है।

20.

अपने प्रेम को
प्रेम की भांति याद करो
दुःख की भांति नहीं।

21.

प्रेम!
पुल बनने की
प्रतीक्षा नहीं करता

या तो तैरना सीख लेता है
या डूब जाता है।

22.

कुछ लोग
जीवन की नदी में
नहाकर निकलते हैं
कुछ चेहरा धोते हैं
और कुछ केवल हथेलियाँ।

23.

बादल फूल हैं
और
बारिश इनकी सुगंध।

24.

मैं प्रतीक्षा से भरी हुई थी
और तुम प्रेम से
तुम्हें मेरा होना चाहिए था।

25.

सुख मनुष्य को
नाव बनाना सिखाता है
और दुःख तैरना।

26.

वो जो तुम्हें छोड़ गया है
ज़रूरी नहीं तुम्हें
भूल भी गया हो!

27.

यदि तुम्हें बसन्त पर विश्वास है
तो तुम पतझड़ पर भी
एक सुंदर कविता लिख सकते हो

परिचय

11 जून 1979 जयपुर (राजस्थान) में जन्म। राजकीय उ. मा. विद्यालय जोधपुर में कार्यरत। कथादेश एवं अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित। प्रकृति, संगीत, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य में रुचि। आकाश से प्रेम, ईश्वर पर विश्वास।

"द से दुःख बड़ी ई से ईश्वर" प्रकाशित होने वाला पहला कविता संग्रह।

हिन्दी पंक्तियाँ

सोशल मीडिया पेज से प्रकाशन तक का सफ़र

पंक्तियाँ पहल की शुरुआत 2017 में एक इंस्टाग्राम पेज के तौर पर हुई। IIT Kanpur में पढ़ते हुए दीपक शंकर जौरवाल ने पाया कि जिन लोगों की स्कूल की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से हुई थी वो अभी भी अंग्रेज़ी बोलने में उतना सहज महसूस नहीं करते थे। ऐसे लोगों में दीपक भी थे। उन्हें बहुत कुछ बोलना था लेकिन अंग्रेज़ी सही से न आने की वजह से पब्लिकली बोल नहीं पा रहे थे।

इसलिए अपने 3rd ईयर में दीपक ने पंक्तियाँ पेज बनाया जहाँ लोग अपने विचार, आइडिया या अन्य कोई कलात्मक कार्य हिन्दी या अंग्रेज़ी में भेज सकते थे। दीपक उनमें से अच्छे काम को चुनकर, उसका पोस्टर बनाकर, पेज पर पब्लिश कर देते। धीरे-धीरे यह काम कैम्पस की बॉउंड्री से बाहर निकलकर और लोगों तक पहुंचने लगा और सभी तरह के लोग पेज से जुड़ने लगे। आज फ़ेसबुक, ट्विटर और सभी जगह मिलाकर हिन्दी पंक्तियाँ से 1 मिलियन से भी ज्यादा लोग जुड़े हुए हैं।

इस अभिव्यक्ति के कार्य को आगे बढ़ाते हुए और नये प्रयोग करते हुए उसी जोश और उत्साह के साथ हम पंक्तियाँ प्रकाशन की शुरुआत कर रहे हैं। उम्मीद है कि सभी पुस्तकों और लेखकों को अपने हिस्से का प्यार आपसे ज़रूर मिलेगा। पढ़ते रहिए, लिखते रहिए और ख़ुद को अभिव्यक्त करते रहिए।

धन्यवाद

टीम पंक्तियाँ

हिन्दी पंक्तियाँ से जुड़ने के लिए:

Instagram : @hindipanktiyaan.official
Facebook : @hindipanktiyaanpage
Twitter : @hindi_panktiyan
Whatsapp : 9129374050
Mail : panktihouse@gmail.com

लेखक से जुड़ने के लिए :

Author Social Media
x: @456_payal
Instagram: @payal_45692
Email: payal45692@gmail.com

आपकी कविता

आपकी कविता

आपकी कविता

बनारस का घाट हो तुम
तुम्हें छूने के लिए
मुझे गंगा होना होगा



कविता / Poetry

पंक्ति प्रकाशन

9 788198 133687

मूल्य ₹ 225